Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 1 July 2020

”पुराणों में दशावतारों में बुद्ध “

- घनश्याम लोटन
(शोधार्थी)
भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
E-mail : *lotanghanshyam11@gmail.com*

शोध सारांश:

प्रस्तुत शोध-पत्र ‘पुराणों में दशावतरों में बुद्ध की प्रारम्भिक अवस्था से उसके भारतीय जनमानस में भगवान विष्णु के दशावतारों में नवें अवतार के रूप में स्थापित महात्मा बुद्ध का विशद् वर्णन किया गया है। साथ ही सामयिक लेखकों की पुस्तकें तथा मूल पुराणों का अवलोकन किया गया है।

कुंजी शब्द: अवतारवाद, विष्णु, बुद्ध, अग्निपुराण एवं श्रीमद्भागवत महापुराण

प्रस्तावना

“पुराणों में ‘दशावतार’ की भावना मध्यकाल की देन है। इन दशावतारों का वास्तविक और वैज्ञानिक आशय मानव जीवन की सतत् उन्नति से है। मनुष्य का विकास पशु योनि द्वारा क्रमिक रूप से हुआ है। ऐसा वैज्ञानिक मानते है। भारतीय पुराणाकारों ने ‘दशावतार’ के माध्यम से ‘पशु से मनुष्य तक के सफर’ को बहुत पहले ही प्रस्तुत कर दिया था। मनुष्य और पशु में मूल अन्तर ‘अहम् भाव’ का होता है। पशु में अहम भाव नहीं होता जबकि मनुष्य में होता है। पशु में समष्टि भाव अर्थात् समूह भाव होता है, जबकि मनुष्य में व्यष्टि भाव अर्थात् अपने निजी व्यक्तित्व के विकास भावना प्रबल होती है। इसी विकास क्रम में मनुष्य अपनी बुद्धि के द्वारा ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने का प्रयास किया है।”[1]

भगवान विष्णु के दस अवतारों में महात्मा बुद्ध को नवां अवतार माना जाता है। महात्मा बुद्ध शाक्य वंश में उत्पन्न हुए जिन्होंने बौद्ध धर्म का प्रवर्तन किया, पुराणों में अवतारों में परिगणित किया गया है। यद्यपि बौद्ध धर्मानुयायियों ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। पुराणों में दो कथाएँ दी गई है। पहली के अनुसार विष्णु ने दुष्टों और असुरों को ऐसी शिक्षा देकर माया-मोह के भुलावे में डालने के लिए बुद्ध अवतार लिया कि उनका अंत हो जाए। दूसरी के अनुसार अच्छे कर्मों तथा वैराग्य भाव का आदर्श उपस्थित करने के लिए उन्होंने बुद्ध अवतार लिया। भगवान विष्णु के दस अवतारों का विश्लेषण करें तो यह बात दिखाई देगी कि पहले तीन अवतारों मत्स्य, कर्म, वराह का समुद्र के साथ द्वन्द्व हुआ और पृथ्वी का उन्होंने उद्धार किया। यह मनुष्य के समुद्र या पानी से अपनी सत्ता के लिए प्रारम्भिक संघर्ष का द्योतक हैं। दूसरी बात यह है कि अवतार विकासवाद के सिद्धान्त से बहुत साम्य रखते है। “श्री आनक चन्द्र ने डार्विन के मत से इसमें बहुत कुछ एकता दिखायी थी:

क्र.सं.	विशेषता	अवतार
1.	जीव सबसे पहले जल में उत्पन्न हुआ। जीवन का पहला विकास जल जीव थे, मुख्यतः मछली।	मत्स्य

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 1 July 2020

2.	जल स्थल दोनों में रह करने वाले जीव/कछुआ, मगर, केकड़े इत्यादि।	कच्छप
3.	जल का संसर्ग त्यागकर स्थल पर रहने वाले जीव/वराह, हिरन, अश्व इत्यादि चौपाएँ।	वराह
4.	वे पशु जो दो पैरों में चलने का प्रयत्न करने लगे बन्दर, कंगारू, रीछ इत्यादि	नृसिंह जिनके पैर मनुष्य के थे
5.	अविकसित मनुष्य	वामन
6.	शारीरिक दृष्टया विकसित होकर जब उसमें बुद्धि का विकास प्रारम्भ हुआ, जबकि वह क्रूर तथा असहाय था।	परशुराम
7.	मस्तिष्क तथा मानवीय गुणों जैसे सहिष्णुता, प्रेम, धार्मिक उत्साह, दया आदि के विकास से युक्त	राम
8.	मस्तिष्क का बहुत विकास-राजनीति, दर्शन, कला आदि का पूरा विकास।	कृष्ण
9.	एक मात्र बुद्धिवादी	बुद्ध
10.	पूर्ण विकसित मनुष्य - भविष्य में होगा।	कल्कि

इस प्रकार अवतारवाद तथा इस युग के प्रतिनिधि सिद्धान्त विकासवाद में मौलिक एकता मिलती है। यह बात अवतारवाद की निरर्थकता के मत को ठीक नहीं बताती। उसे सार्थक तथा शास्त्रीय पृष्ठभूमि वाला सिद्ध करती है।"[2]

मेरे शोध-पत्र का विषय पुराणों में दशावतारों में बुद्ध है। अतः भगवान विष्णु के दस अवतारों ने नवें अवतार के रूप में स्थापित महात्मा बुद्ध का विशद् विश्लेषण किया जाएगा।

बुद्ध का अवतार: बुद्ध का जीवन चरित्र नितान्त विख्यात है। हीनयान् सम्प्रदाय में बुद्ध का वैयक्तिक जीवन ही आदर्श माना जाता है जिसका अनुकरण तथा जिनके उपदिष्ट अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण साधक को 'अर्हत्' की उन्नत दशा पर पहुंचा देता है, परन्तु थोड़ी ही शताब्दियाँ पीछे महायान् में गौतम बुद्ध अवतार के रूप में गृहीत किये गये, उनकी मूर्ति का निर्माण होने लगा तथा कारूण्य और दया की मूर्ति 'बोधिसत्व' का आदर्श सर्वत्र परिगृहीत किया गया। इस प्रकार महायान में वे तुषित स्वर्ग के निवासी लोकोत्तर बुद्ध माने जाने लगे तथा इस लोकोत्तरवाद के आगे उनका मानव रूप एकदम ह्रास पाकर तिरोहित सा हो गया। यही तो बौद्ध धर्म में बुद्ध के अवतार का निर्देश है। ब्राह्मण वैदिक धर्म में भी बुद्ध विष्णु के अवतार माने जाने लगे। कब तथा किस परिस्थिति में यही विचार का विषय है।

विक्रम संवत् की आरम्भिक शताब्दियों में बुद्धधर्म का भूयान् अभ्युत्थान हुआ। इसमें राजाश्रय ही प्रधान हेतु था। मौर्य सम्राट अशोक कलिंग युद्ध में भूयान्-नरसंहार से इतना संतप्त तथा व्यथित हुआ कि उसने सदा-सर्वदा के लिए युद्ध को बन्द कर दिया और बुद्धधर्म को राजधर्म बनाकर इसके प्रचार के निमित्त विदेशों में भिक्खुओं को भेजा विक्रम पूर्व तृतीय शती में। इसके लगभग चार सौ वर्ष के अनन्तर कुषाण नरेश कनिष्क ने प्रथम शती में बुद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अश्रान्त परिश्रम किया। चतुर्थ संगीति बुलाई तथा चीन जैसे देश में अपने प्रचारक भेजे। बुद्धधर्म के बाहरी देशों में अभूतपूर्व विजय के साथ ही साथ भार में भी इसका वृहत् प्रसार हुआ। भारतीय जनता, विशेषतः निम्न स्तर की, जो वैदिक धर्म में श्रद्धा रखती थी, बौद्धधर्म का सरलता के चाकचिक्य के आगे उस श्रद्धा को भूलकर इस नवीन धर्म में दीक्षित होने लगी। पुराधों में इसी भूली जनता को वैदिक धर्म में पुनर्दीक्षित के करने के निर्मित्त एक सार्वभौम धार्मिक क्रान्ति उत्पन्न की। अवतारों में बुद्ध की गणना भी इस क्रान्ति का एक महनीय साधन था।

"कुमारिल भट्ट ने बौद्धों के दार्शनिक सिद्धान्तों का बड़ा ही प्रौढ़ खण्डन अपने श्लोकवार्तिक तथा तन्त्रवार्तिक ग्रन्थों में किया। तथ्य तो यही है कि कुमारिल भट्ट तथा शंकर इन दोनों आचार्यों की तर्ककर्केश वाणी में बौद्धधर्म की धज्जियाँ उड़ा दी जिसके कारण इसने अपने मूलस्थान भारत से निष्कासित होकर भारतेतर प्रदशों में अपना आश्रयण

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 1 July 2020

लिया। फलतः कुमारिल बुद्ध के प्रति श्रद्धा का भाव रहेंगे यह सोचना ही गलत है। उन्होंने पुराण का हवाला देकर स्पष्ट शब्दों में घोषणा की है कि शाक्य आदि (बौद्धधर्म आदि) कलयुग में धर्म में विप्लव मचाने वाले है; पुराणों में यह कथन बहुशः संस्मृत है।

स्मर्यन्ते च पुराणेषु धर्म-विलुति-हेतवः।
कली शाक्यादयस्तेपा को वाक्यं श्रोतुमर्हति।।
- तंत्रवार्तिक (जै. सू. 1/3/7) ” [3]

कुमारिल के इस प्रकार प्रख्यात होने पर भी, पुरातत्वीय प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि अष्टम शती में बुद्ध को अवतार रूप में गणना जन-समाज में परिगृहित होने लगी थी। “दक्षिण भारत के महावलिपुरम् के पर्वत से काटकर बनाये गये मन्दिर में एक शिलालेख उपलब्ध है जिसका एक अधूरा श्लोक इस प्रकार है:

.... हस्य नारसिंहश्चय वामनः।
रामो रामस्य (श्च) रामस्य (श्च) बुद्धः कल्कि च ते दश।।

इस शिलालेख का समय सप्तम शती का उत्तरार्द्ध बताया गया है। मध्यप्रदेश के ‘सीरपुर’ नामक स्थान में 8वीं सदी के आसपास का एक मन्दिर है जिसमें राम की मूर्ति के बगल में बुद्ध की अपनी व्यानावस्थित मुद्रा में मूर्ति मिलती है। मन्दिर का निर्माणकाल अष्टम शती के आसपास माना गया है। पिछले युग में काश्मीर कवि क्षेमेन्द्र ने अपने ‘दशावतार महाकाव्य’ (समाप्ति काल 1060 ई.) बुद्ध को नवम् अवतार के रूप में वर्णित किया है। फलतः बुद्ध का विष्णु अवतारों में गणना का समय नवम शती मानना अनुपयुक्त नहीं होगा।”[4]

पुराणों में, एक-दो छोड़कर सर्वत्र ही बुद्ध अवतारों में परिगणति किये गये है। परन्तु पौराणिकों के सामने विकट समस्या थी कि बुद्ध के वेदबाह्य सिद्धान्तों का वैदिक सिद्धान्त के साथ आनुकूल्य कैसे दिखलाया जाए? जिसने वैदिक यज्ञयागों की जमकर निन्दा की, वेद को धूर्तों का प्रलाप माना तथा वेद प्रतिपाय ईश्वर तथा आत्मा का भी अभाव ही माना, उस बुद्ध को वैदिक अवतारों के बीच स्थान देना बड़े ही साहस का काम था। परन्तु एक आवश्यक उद्देश्य की पूर्ति के लिये पुराधों को यही करना पड़ा। वह व्याज था वेद-विरोधी असुरो का व्यामोहन। इस तर्क की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है “भागवत के इस श्लोक में

ततः कलौ सम्प्रवृत्रे सम्मोहाय सुरद्विषाम्।
बुद्धो नाम्नाजनसुतः कीकटेषु भविष्यति।।

- भागतव महापुराण 1/03/24

अर्थात् उसके बाद कलियुग आ जाने पर मगध देश (विहार) में देवताओं के द्वेषी दैत्यों को मोहित करने के लिये अजन के पुत्र के रूप में आपका बुद्धावतार होगा।” [5]

“इसी भाव का श्लोक भागवत पुराण में मिलता है:

देवद्विवां निगमवर्त्मनि निष्ठितानां
पूर्भिर्मयेन विहिताभिरद्दश्यतूर्भिः।
लोकान् ध्नतां मतिविमोहमतिप्रलोभं
वेषं विधाय बहुभाष्यतः औपधर्म्यम्।।

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 1 July 2020

अर्थात् देवताओं के शत्रु दैत्य लोग भी वेदमार्ग का सहारा लेकर मय दानव के बनाये हुये अदृश्य वेग वाले नगरों में रहकर लोगों का सत्यनाश करने लगेंगे, तब भगवान लोगों की बुद्धि में मोह और अत्यन्त लोभ उत्पन्न करने वाला वेश धारण करने बुद्ध के रूप में बहुत से उपधर्मों का उद्देश्य करेंगे।”[6]

“भागवत पुराण में अन्यन्त्र मिलता है:

भूमेर्भरावतरणाय यदुष्वजन्मा
जातः करिष्यति सुरैरपि दुष्कराणि।
वादैर्विमोहध्यति यज्ञकृतोतदर्शनं
शूद्रान् कलौ क्षितिभुजो न्यहनिष्यदन्ते।।

भागवत पुराण 11/4/22

अर्थात् राजन्! अजन्मा होने पर भी पृथ्वी का भार उतारने के लिये वे ही भगवान यदुवंश में जन्म लेगे और ऐसे-ऐसे कर्म करेंगे, जिन्हें बड़े-बड़े देवता भी नहीं कर सकते। फिर आगे चलकर भगवान ही बुद्ध के रूप में प्रकट होंगे और यज्ञ के अनधिकारियों को यज्ञ करते देखकर अनेक प्रकार के तर्क-वितर्कों से मोहित कर लेगे और कलियुग अन्त में कल्कि अवतार लेकर वे ही शूद्र राजाओं का वध करेंगे।”[7]

“इसी प्रकार विष्णु पुराण में मिलता है:
एवं बुध्यत बुध्यध्वं बुध्यतैवमितीरयन्!
मायामोहः स दैतेयान्धर्ममत्याजयन्निजम्।।

विष्णु पुराण 11.4.22

अर्थात् इस प्रकार ‘बुध्यत (जानो), बुध्यध्वं (समझो), बुध्यत (जानो) आदि शब्दों से बुद्ध धर्म का निदेश कर मायामोह ने दैत्यों से उनका निजधर्म छुड़ा दिया।”[8]

“अग्निपुराण तो स्पष्ट ही कहता है कि यह महामोह शुद्धोदन का पुत्र बन गया तथा दैत्या को वेदधर्म छोड़ने के लिए मोहित किया।

महामोहस्वरूपोसौ शुद्धोदनसुतोभवत्।
मोहयामास दैत्यांस्तान् त्याजिता वेदधर्मकम्।।

- अग्नि पु. 16/2

यही तथ्य भविष्यपुराण (4/12/26-29) में पाया जाता है। श्रीमद्भागवत में बुद्धावतार का अनेकत्र वर्णन किया गया है। (भाग. 2/7/37, 6/8/19; 10/40/22 तथा 11/4/23) फलतः बुद्ध अवतार में प्रायः सब पुराणों में स्वीकृत है।”[9]

निष्कर्ष: रूप में हम कह सकते है कि भगवान विष्णु के अनेक अवतारों में दस अवतार प्रमुख माने जाते है जिसमें नवें अवतार के रूप में बुद्ध को कई विद्वानों ने बलराम तथा हंस से प्रतिस्थापित किया है तथा बुद्ध को अवतार नहीं माना है। लेकिन अकाट्य प्रमाणों के परिप्रेक्ष्य में इसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है कि बुद्ध का पुराण साहित्य में अनेक जगह उल्लेख है तथा उनको भगवान विष्णु का नवां अवतार माना गया है।

Copyright ⓒ 2020 Authors

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मित्तल, डॉ. महेन्द्र: क्या है पुराणों में? नौवां संस्करण 2013, पृ.64.
2. शिव कुमार गुप्त, सम्पादक, भारतीय संस्कृति के मूलाधार, (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2002), पृ.सं. 143-145.
3. उपाध्याय, आचार्य बलदेव: पुराण-विमर्श, वाराणसी, 1978, पृ.191.
4. वही, पृ.192.
5. श्री मद् भागवत महापुराण, प्रथम खण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 2072, पृ.91.
6. वही, पृ. 215.
7. श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 2072, पृ.736.
8. श्री विष्णु पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 2072, पृ. 226.
9. भट्टाचार्य, डॉ. रामशंकर: इतिहास पुराण का अनुशीलन, काशी, 1963, पृ. सं. 280-283.

Copyright © 2020 Authors